प्रातः क्लास 8/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

शिवबाबा जानते हैं यह हमारे बच्चे आत्माएँ हैं। तुम बच्चों को भी अपन को आत्मा समझ शरीर को भूल शिवबाबा को याद करना है, जो शिवबाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को पढ़(ा)ता हूँ। शिवबाबा भी निराकार है, तुम आत्माएँ भी निराकार हो। यहाँ आकर पार्ट बजाते हो। बाप भी आकर पार्ट बजाते हैं। यह भी तुम जानते हो ड्रामा प्लैन अनुसार बाप आकर हमको गुल-2 बनाते हैं, तो सभी अवगुणों को छोड़ गुणवान बनना चाहिए। गुणवान कब किसको दुख नहीं देते। सुना-अनसुना नहीं करना चाहिए। किसको दुख है तो वह दुख दूर करने का है। बाप भी आते हैं तो सारी दुनिया के दुख ज़रूर दूर होनी है। बाप तो श्रीमत देते हैं। जितना हो सके पुरुषार्थ कर सभी के दुख दूर करते रहो। पुरुषार्थ से ही अच्छा पद मिलेगा। पुरुषार्थ न करने से पद कम हो जावेगा। वह फिर कल्प-कल्पांतर का घाटा पड़ जाता है। बाप को तो बच्चों को हर बात समझानी होती है। बच्चे अपन को घाटा डाले, बाप यह नहीं चाहता। दुनिया इन फायदे और घाटे को नहीं जानती। इसलिए बच्चों को अपन पर रहम करना है श्रीमत पर चल। भल बुद्धि इधर-उधर भागती है, तो कोशिश करो। हम ऐसे बेहद के बाप को क्यों नहीं याद करते हैं, जिस याद से ही ऊँच पद मिलता है। कम से कम (स्वर्ग) में तो जाते हैं; परंतु स्वर्ग में भी ऊँच पद पाना है। बच्चों के माँ-बाप होते हैं, कहते हैं ना हमारा बच्चा स्कूल में पढ़कर ऊँच पद पावे। यहाँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता। तुम्हारे मिट-मायट(मित्र-संबंधी) यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। उस पढ़ाई में तो मिट मायट आदि सभी जानते हैं। इसमें कोई जानते हैं, कोई नहीं जानते हैं। कोई का बाप जानता है, तो भाई नहीं जानता; कोई की माँ जानती है, तो बाप नहीं जानता; क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई है ना। विचित्र बाप ही पढ़ाते हैं। और तो सभी देहधारी देहधारियों को ही पढ़ाते हैं। यह है विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला। नम्बरवार समझते हैं। बाप समझाते हैं भक्ति तो तुमने बहुत ही की है। अथाह की है। सो भी नम्बरवार। जिन्होंने बहुत भक्ति की है, वही फिर यह ज्ञान भी लेते हैं। अभी भक्ति की रसम-रिवाज़ पूरी होती है। आगे मीरा के लिए कहा जाता था, उसने लोक-लाज, कुल की मर्यादा छोड़ी। यहाँ तो तुमको सारे विकारी कुल की मर्यादा छोड़नी है। बुद्धि से सभी का सन्यास करना है। इस विकारी दुनिया का कुछ भी अच्छा ही नहीं लगता है। छी-छी कर्म करने वाले बिल्कुल ही अच्छे नहीं लगते हैं। वह अ..... तकदीर को खराब करते हैं। ऐसा कोई बाप थोड़े ही होगा जो बच्चों को किसको तंग करता हुआ देख पसंद करेगा वा न पढ़ना पसंद करेगा। तुम बच्चे जानते हो वहाँ कोई ऐसे बच्चे होते ही नहीं। नाम ही है देवी-देवताएँ। कितना पवित्र नाम है। अपनी जाँच करनी है, हमारे में दैवीगुण है। सहनशील भी बनना होता है। लड़ाई में कितना सहनशील बनते हैं। यह तो है योद्धे लोगों की बात। यह लड़ाई तो बड़ी मीठी है। बाप को याद करने में कोई लड़ाई की बात नहीं है। बाकी हाँ, इसमें माया विघ्न डालती है। इनकी सम्भाल करनी होती है। माया पर विजय तो हमको ही पानी है। तुम जानते हो हम कल्प-2 जो कुछ करते आये हैं, बिल्कुल एक्युरेट वही पुरुषार्थ चलता है, जो कल्प-2 चलता आता है। सतयुग में तुम जानते हो हम पद्मापदमभाग्यशाली बनते हैं। अथाह सुखी रहते हैं। ऐसे सुखों को लात मत मारो। कल्प-2 बाप ऐसे ही समझाते हैं। यह कोई नई बात नहीं। वह तो बहुत ही पुरानी बात है। बाप तो चाहते हैं बच्चे पूरा गुल-2 बने। लौकिक बाप की भी दिल होगी ना हमारे बच्चे गुल-2 बने। पारलौकिक बाप तो आते ही हैं काँटों को फूल बनाने। तो ऐसा बनना चाहिए ना। मंसा-वाचा-कर्मणा। जबान पर भी बहुत खबरदारी चाहिए। हरेक कर्मइन्द्रियों पर बड़ी खबरदारी चाहिए। माया बहुत धोखा देने वाली है। इनकी पूरी सम्भाल रखनी है। बड़ी मंज़िल है! आधा कल्प से क्रिमिनल दृष्टि बनी है। उनको एक ही जन्म में सिविल बनानी है जैसे इन ल॰ना॰ के हैं। यह सर्वगुण सम्पन्न..... हैं ना। वह क्रिमिनल दृष्टि होती नहीं। रावण ही नहीं। यह कोई नई बात नहीं। तुमने अनेक बार यह पद पाया है। दुनिया को तो बिल्कुल ही पता नहीं है कि यह क्या पढ़ते हैं। बाप तुम्हारी शुभ आस पूरी करने आते हैं। अशुभ आशाएँ

रावण की होती हैं। तुम्हारी हैं शुभ आशाएँ। क्रिमिनल ..... है बच्चों को। तुम्हारे अथाह सुखों का वर्णन नहीं कर सकते। दुःखों का वर्णन होता है। सुख का वर्णन थोड़े ही होता है। तुम सभी बच्चों की एक ही आस है पावन बने। कैसे पावन बनेंगे सो तो तुम जानते हो। फर्स्ट नं॰ नई दुनिया में पावन तो यह देवी-देवताएँ ही हैं। पावन बनने में ताकत देखो कितनी है! तुम पावन बन पावन दुनिया का राज्य पाते हो। इसलिए कहा जाता है इस देवता धर्म में ताकत बहुत है। यह ताकत कहाँ से मिलती है? सर्वशक्तिवान बाप से।

घर-घर में तुम दो/चार मुख्य चित्र रख बहुत सर्विस कर सकते हो। वह समय आवेगा कर्फ़्यू आदि ऐसे लग जावेगी जो तुम कहाँ भी आ-जा नहीं सकोगे। तुम हो ब्राह्मण सच्ची गीता सुनाने वाले। नॉलेज तो बड़ी सहज है। जिनके घर वाले सभी आते हैं, शांति लगी पड़ी है। उन्हों के लिए तो बहुत सहज है। दो/चार मुख्य चित्र रखे हों। यह त्रिमूर्ति, गोला, झाड़ और सीढ़ी का चित्र यह बिल्कुल काफी है। इनके साथ गीता का भगवान कृष्ण नहीं, वह भी चित्र अच्छा है। कितना सहज है। इनमें कोई पैसा खर्चा नहीं होता। चित्र तो रखे ही हैं। चित्रों को देखने से भी ज्ञान स्मृति में आता है। कोठरी बनी पड़ी हो। उसमें भल तुम सो भी जाओ, अगर श्रीमत पर चलते रहे तो। तो तुम बहुतों का कल्याण कर सकते हो। कल्याण करते भी होंगे। फिर भी बाप रिमाइंड कराते हैं ऐसे-2 तुम कर सकते हो। ठाकुरों की मूर्ति रखते हैं ना। इसमें तो फिर है समझाने की बात। जन्मा-जन्मांतर तुम भक्तिमार्ग में मंदिरों में भटकते रहे हो; परंतु यह पता नहीं है कि यह है कौन। मंदिरों में देवियों की पूजा करते हैं, उनको ही फिर पानी में जाकर डुबोते हैं। कितनी अथाह मूर्खता है! कितना खर्चा करते हैं! गुडिड्यों का खेल करते हैं। रचयिता भी बनते हैं फिर उनकी पालना भी .....। फिर उनका विनाश कर्ता भी बन जाते हैं। इसलिए अपन को भगवान कहते हैं। एक्ट ही ऐसी करते हैं। कई तो रोते भी हैं, हूबहू जैसे मुर्दे को श्मशान में ले जाते हैं तो रोते हैं ना। यह भी देवियों को जब डुबोने ले जाते हैं तो बहुत रोती है। कितना अज्ञान है। पूज्य की पूजा कर फिर उनको उठाकर समुद्र में डाल देते हैं। गणेश को, लक्ष्मी को, सरस्वती को भी डुबोते हैं। कितनी मूर्खता है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, कल्प-2 यह बातें समझाते हैं। भक्ति मार्ग में कितनी दुर्गति मार्ग का काम करते हैं। है जड़ चित्र; परंतु उनमें भावना कितनी है! कितना रोते हैं! नहीं तो रोना होता है चैतन्य के लिए। जड़ के लिए थोड़े ही रोना होता है; परंतु उन्हों का भाव ऐसा है। कोई समझ.... वाला तो है नहीं। बाप आकर रियलाइज़ कराते हैं, तुम यह क्या कर रहे हो। बच्चों को तो नफरत आनी चाहिए, जबकि बाप इतना समझाते रहते हैं। मीठे-2 रूहानी बच्चों तुम यह क्या करते हो। इनको कहते ही हैं विषय वैतरणी नदी। ऐसे नहीं वहाँ कोई क्षीर का सागर है; परंतु हर चीज़ वहाँ ढेर होती है। कोई चीज़ पर पैसे नहीं लगते। पैसे तो वहाँ होते ही नहीं। सोने के ही सिक्के वहाँ देखने में आते हैं जबकि मकान में ही सोना लगता है। सोने की ईंटें लगती हैं। तो सिद्ध होता है वहाँ तो सोने-चांदी का मूल्य ही नहीं। यहाँ तो देखो कितना मूल्य है। चाँदी का ताला सात रुपये कब सुना? इसको कहा जाता है पिछाड़ी। सो भी तुम बच्चे जानते हो। एक-एक बात में वण्डर है। मनुष्य तो मनुष्य ही हैं। यह (देवताएँ) भी मनुष्य हैं; परंतु उनका नाम है देवता। इन्हों के आगे मनुष्य अपनी गंदगी जाहिर करते हैं। हम पापी नीच हैं। हमारे में कोई गुण नहीं है। तुम बच्चों की बुद्धि में अभी एमऑबजेक्ट है। हम यह मनुष्य से देवता बनते हैं। देवताओं में दैवीगुण है, यह तो सभी समझते हैं। मंदिरों में जाते हैं; परंतु यह नहीं समझते कि यह भी तो मनुष्य ही हैं, हम भी मनुष्य हैं; परंतु यह दैवीगुण वाले हैं, हम आसुरी गुण वाले हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में आता है हम कितने नालायक थे। इन्हों के आगे जाकर गाते थे आप सर्वगुण सम्पन्न...., अभी बाप समझाते हैं यह पास्ट होकर गये हैं इनमें दैवीगुण थे। अथाह सुखी थे। वही फिर अथाह दुःखी बने हैं। राधे के भक्त कहेंगे सर्वव्यापी राधे ही राधे है। कृष्ण के भक्त फिर कहेंगे कृष्ण ही कृष्ण है। ऐसे कहते-2 भगवान को भी सर्वव्यापी कह दिया है। अभी बाप बैठ समझाते हैं सभी में 5 विकारों की (प्रवेशता है।)

अभी तुम विचार करते हो कैसे हम ऊपर से गिरते-2 एकदम पट आकर पड़े हैं। भारतवासी कितना साहुकार थे। अभी तो देखो कर्जा उठाते रहते हैं। और कोई बता न सके। यह सभी बातें बाप ही समझाते हैं। ऋषि-मुनि भी नेती-2 कहते थे, अर्थात् हम नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो वह तो सच कहते थे। न बाप को, न रचना के आदि-मध्य-अंत को जानते थे। अभी भी कोई नहीं जानते हैं सिवाय तुम बच्चों के। बड़े-2 सन्यासी महात्मा कोई नहीं जानते। वास्तव में महान आत्मा तो यह (ल॰ना॰) हैं ना। एवर पवित्र हैं। यह भी नहीं जानते थे, तो और कोई कैसे जान सकते थे। कितनी सहज बातें बाप बैठ समझाते हैं; परंतु कई बच्चे भूल जाते हैं। कई अच्छे रीत गुण धारण करते हैं तो मीठे लगते हैं। जितना बच्चों में मीठा गुण देखते हैं तो दिल खुश होती है। कोई तो नाम बदनाम कर देते हैं। यहाँ तो फिर बाप,टीचर,सद्गुरु हैं। तीनों की निन्दा कराते हैं। सत बाप, सत टीचर, सत गुरू की निन्दा कराने से फिर ट्रवल(ट्रिपल) दण्ड पड़ जाता है; परंतु कई बच्चों में कुछ भी समझ नहीं है। बाप समझाते हैं ऐसे भी होंगे ज़रूर। माया भी कोई कम नहीं है। वह भी बरोबर शक्तिवान है। आधा कल्प पापात्मा बनाती है। बाप फिर आधा कल्प लिए पुण्यात्मा बनाते हैं। वह भी नम्बरवार बनते हैं। बनाने वाले यह दो हैं। राम और रावण। राम परमात्मा को ही कहते हैं। राम-राम कह फिर पिछाड़ी में शिव को नमस्कार करते हैं। वही परमात्मा है। परमात्मा के नाम गिनते हैं। तुमको तो गिनने की दरकार नहीं। बाप कहते हैं सिर्फ निरंतर याद करते रहो तो तुम्हारे पाप कटते जावेंगे। सिवाय योग के और कोई उपाय है नहीं। यह ल॰ना॰ पवित्र थे ना। इन्हों की दुनिया थी जो पास्ट हो गई है। इसको स्वर्ग नई दुनिया कहा जाता है। फिर जैसे पुराना मकान होता है तो टूटने लायक बन जाता है। यह दुनिया भी ऐसी है। अभी है कलियुग के पिछाड़ी। कितनी सहज बातें समझने की धारण करने और कराने की हैं। बाप तो सभी को समझाने लिए नहीं जावेगा। तुम बच्चे ऑन गॉडली सर्विस पर हो। बाप जो सर्विस सिखलाते हैं हम वही सर्विस करते हैं। उन्हों की है डॉगली सर्विस ओनली। तुम्हारी है गॉडली सर्विस ओनली। वह डॉग-विचिज़ बनाते हैं। तुम गॉड-गॉडेज़ बनाते हो। इसलिए वंदेमात्रम गाया जाता है। माता के साथ पिता भी है ना। तुम्हारा नाम ऊँच करने लिए बाबा ने कलश तुम माताओं को दिया है। ऐसे नहीं कि पुरुषों को नहीं मिलता है। मिलता तो सभी को है। तो बाप बैठ समझाते हैं भक्ति है दुर्गति। देवताओं के चित्र से भी पूरावा नहीं होता तो फिर बुद्ध, क्राइस्ट आदि सभी के चित्र बैठ इकट्ठे करते हैं। इनको कहा जाता है व्यभिचारी भक्ति। हनुमान की भी पूजा करेंगे तो गणेश की भी पूजा, टिवाटे की पूजा करते हैं। तमोप्रधान मनुष्यों की भी बैठ पूजा करते हैं। इनको कहा जाता भूत पूजा। ईश्वरीय पूजा, फिर दैवी पूजा, फिर है भूत पूजा। अभी पूजाएँ भी सब पूरी होती हैं। वहाँ पूजाओं आदि की होली डे होती नहीं। हरेक गांव के ही भिन्न-2 रसम-रिवाज़ होती है। अष्टमी के दिन नेपाल में कत्लाम(कत्लेआम) होता है। जितना साहुकार उतना बड़ा जानवर का शिकार करेंगे। पाड़े को तलवार से मारते हैं। मार ही मार चलती है। छोटे बच्चे से भी मरवाते हैं। यह है रसम। आगे मनुष्यों की बल(बलि) चढ़ती थी। वह भी गवर्मेन्ट ने बंद किया है। मनुष्यों के मांस को महाप्रसाद समझ बांटते थे, वह फिर खाते भी थे। अभी बकरे का महाप्रसाद समझते हैं। तो यह सब राक्षस ठहरे ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हम कितने सुखी स्वर्गवासी थे। वहाँ कोई दरिद्रता नहीं थी। अभी है संगमयुग। फिर हम उस नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं। अभी है कलियुग, पुरानी पतित दुनिया। बिल्कुल ही जैसे भैंस बुद्धि मनुष्य हैं। कुछ भी समझते नहीं। क्या-2 अखबारों में समाचार पड़ते हैं। कल बाबा ने अखबार में देखा एक 25 वर्ष का साधु जवान एक साहुकार के बच्ची को भगाकर ले जाता थे। पुलिस को पता पड़ गया झट पकड़ लिया। ऐसी-2 बातें ढेर पड़ती हैं। महऋषि एरोप्लैन में चक्र लगाते हैं, यह करते हैं। यहाँ तो इन सभी बातों को भूलना पड़ता है। देह सहित देह के सभी सम्बंधों को छोड़ अपन को आत्मा समझना है। शरीर में आत्मा न है तो शरीर कुछ भी कर न सके। इन शरीर पर कितना मोह रखते हैं। शरीर जल गया, आत्मा ने जाकर दूसरा शरीर लिया तो भी 12 मास या हुसेन मचाते रहते हैं। अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है तुम्हारी

आत्मा शरीर छोड़ती है तो ज़रूर बहुत ऊँच घर में जन्म लेगी; क्योंकि तुम ऊँच कुल के बनते हो ना। वह भी नम्बरवार। थोड़े ही ज्ञान वाला साधारण घर में जन्म लेंगे। ऊँच ज्ञान वाला तो बहुत ऊँच कुल में जन्म लेगा। वहाँ सुख भी बहुत मिलता है। बाप तुम्हारी महिमा करते हैं; क्योंकि तुम अपरंअपार सुख भोगते हो। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। बाप तुम्हारी महिमा करते हैं; क्योंकि तुम अपार सुख भोगते हो। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। कल की बात है ना। शास्त्रों ने तो मनुष्य को बिल्कुल ही घोर अंधियारे में डाल दिया है। अभी फिर बाप घोर सोझरे में ले जाते हैं। तुम सभी को यही समझाते हो बेहद के बाप को याद करो तो यह वर्सा मिलेगा। स्वर्ग में चले जावेंगे। अभी नर्कवासी वैश्यालय का धंधा छोड़ दो, तब ही शिवालय में जावेंगे। सो भी एक जन्म लिये कहते हैं पवित्र बनो। 63 जन्म तो तुम गंद में पड़े। अभी मैं तुमको स्वर्ग में ले जाता हूँ। तो तुम मेरे मददगार बनो। दूसरे को कहें काम महाशत्रु है और खुद काम के बस हो जाये तो उनको क्या कहेंगे। ऐसे ही महान पापात्मा होते हैं। कई छोड़ भी देते हैं, कई गुप्त रहते हैं। नुकसान तो अपना ही करते हैं ना। रजिस्टर बहुत खराब होता है। यहाँ तुम बैठे हो, तुमको शिवबाबा ही याद है। जानते हो शिवबाबा हमको समझाते हैं। शिवबाबा भी याद रहते हैं और पढ़ाई भी याद रहती है। तुम यहाँ आते ही हो रिफ्रेश होने। फिर भी सर्विस पर ज़रूर जाना पड़े। तुम बच्चे अंदर में फील करते हो हम पद्मापदम भाग्यशाली हैं। बाबा ने तुम्हारा नाम रखा है। तुम कितने पद्मापदम भाग्यशाली बनते हो। पदमपति सेठ है ना। आगे इतने साहुकार भारत में नहीं थे। अभी तो बात मत पूछो। इसलिए समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। तुम समझते हो हम महान नर्क में हैं। बाबा तो है गरीब निवाज़। यह भी ड्रामा बना हुआ है। उन्हों के लिए तो यहीं स्वर्ग है। तुम समझते हो हमको बाबा स्वर्ग में ले जाने लिए आये हैं। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। क्या इतनी मेहनत भी नहीं करेंगे? कैसे भी आराम से बैठो। बुद्धि से बाप को याद करो। नींद न आनी चाहिए। बाप को याद करते रहो। बाप और वर्सा। गीता में भी अक्षर है मन्मनाभव..... देह सहित देह के सभी संबंध छोड़ मामेकं याद करो तो तुम सभी बच्चों को पापों से मुक्त कर दूँगा और फिर मद्याजीभव, अर्थात् तुम अपने दैवी धर्म में चले जावेंगे। देवी-देवताओं का पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था ना। फिर 84 जन्मों बाद क्या बन गये हैं। फर्क तो है ना। अभी फिर चेंज होना है। विनाश का सा॰ भी बहुतों को होता है। एक तो ब्रह्मा का, विनाश का, और फिर कृष्ण का सा॰ होता है। तुम यहाँ नर से ना॰ बनने आये हो; परंतु पहले तो प्रिंस बनेंगे ना। कृष्ण का चित्र मोर-मुकुट से दिखाया है। राधे को मुकुट आदि नहीं देते। तो वही सा॰ होता है। आगे चल तुमको भी सा॰ होते रहेंगे। ब्रह्मा का सा॰ होगा, कहेंगे तुम इन ब्राह्मणों के पास जाओ तो ब्राह्मण तुमको देवता बनावेंगे। शूद्र से ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण से देवता तुम बनते हो। यह बाजोली याद करो तो भी तुम पद्मापदम भाग्यशाली बन सकते हो। कितना सहज है! यहाँ अच्छी रीत सुनते हैं। बाहर निकल फिर झोली खाली कर देते हैं। छेद से सब बह जाता है। कोई धारण कर और कराते हैं। कोई न धारणा करते हैं, न करा सकते हैं। कोई तो बहुत ही खुशी से जाते हैं। कोई को मित्र-संबधी आदि याद पड़ते हैं। कच्चे होने कारण बुद्धियोग उस तरफ चला जाता है। एक तरफ सर्विस करते हैं, फिर माँ-बाप कहेंगे चलो घर। तो ज़रूर बुद्धियोग जावेगा। सर्विस से बुद्धि हट जाती है। ऐसे भी कई बच्चों के मात-पिता होते हैं। उनको कहेंगे निभागे; क्योंकि वह अपना भाग्य बना रही है, उनको खैंचकर ले जाते हैं। ज्ञान नहीं है ना। जितना देरी करेंगे विकर्माजीत बन न सकेंगे। बहुत हैं जिनको कशिश रहती है। बहुतों की सर्विस करते रहते हैं। बाप तो कितना क्लीयर कर समझाते रहते हैं। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

सूचनाः– सभी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय सेंटर्स के ध्यान पर हो कि गोपी अजमेर वाली (मनोहर के संबंधी) को बद-चलन कारण कोई भी सेंटर्स पर आने न देना है।